अविचलित ईमानदारी

स्व. श्री चिमनलाल सीतलवाड़ उन दिनों बम्बई विश्वविद्यालय के उप कुलपति नियुक्त नहीं हुए थे, किसी और उच्च न्यायिक पद पर थे । एक अभियोग में बचने के लिए एक व्यक्ति उनके पास आया और एक लाख रूपए घूस के रूप में देने लगा । किन्तु सर सीतलवाड़ ने उसे अस्वीकार कर दिया । तब वह व्यक्ति बोला- "सोच लीजिए साहब ! आपको एक लाख रुपए देने वाला कोई दूसरा नहीं मिलेगा । " सर सीतलवाड़ हँसे और बोले- "नहीं भाई ! देने वाले तो बहुत मिलेंगे पर इतनी बड़ी राशि मुफ्त में लेने से इन्कार करने वाला तुम्हें नहीं मिलेगा । "

संग्रहकर्त्ताः-
आदर्श कुमार
जे टी ओ, सी एण्ड सी ग्रुप
मानकीकरण निदेशालय

उपहार

प्रायः हमें विवाह सम्बन्धी निमन्त्रण पत्रों में उपहार न लाने का अनुरोध पढ़ने को मिल जाता है । परन्तु विवाह के एक निमन्त्रण पत्र में अद्भुत चीज पढ़ने को मिली "अगर आप कोई उपहार लाना ही चाहते हैं तो 'आर्म्ड फोर्सेज पर्सनल वेलफेयर फंड' के पक्ष में देय चैक लाइए । " यह अनुरोध किया गया था भारत सरकार के विदेश मामलों के सचिव श्री जे.सी.शर्मा के बेटे के विवाह के निमंत्रण पत्र में । इस अनुरोध का मेहमानों पर असर भी हुआ और उन्होंने वर-वधू के लिए किसी भी प्रकार का उपहार लाने से परहेज किया, लेकिन जवानों के को-न के लिए 1.5 लाख रुपया इस शुभ अवसर पर एकत्र हो गया । श्री शर्मा ने भारत-पाकिस्तान के बीच 1971 की लड़ाई में भाग लिया था और पदक भी प्राप्त किया था । उनकी खुशी और भी बढ़ गई जब वधू अर्चना के परिवार वालों ने भी इस अद्भुत उपहार लाने की व्यवस्था को सराहा । वधू अर्चना के पिता श्री रवि राणा सेना के रिटायर्ड कर्नल हैं।

संग्रहकर्त्ताः-
आदर्श कुमार
जे टी ओ, सी एण्ड सी ग्रुप
मानकीकरण निदेशालय

अनमोल वचन

1. धीर पुरू-ों का स्वभाव यह होता है कि वे आपत्ति के समय और भी दृढ़ हो जाते हैं ।

-सोमदेव

2. श्रद्धा में निराशा का कोई स्थान नहीं है ।

-गांधी जी

3. परमेश्वर विद्वानों की संगति से प्राप्त होता है ।

-ऋग्वेद

4. घर सेवा-भाव की पहली सीढी है । इसे छोड़कर तुम ऊपर नहीं जा सकते।

-प्रेमचन्द

5. लकड़ी को जोड़ते हैं तो दोनों छोरों को थोड़ा-थोड़ा काटकर खाली स्थान बनाते हैं, जिससे जोड़ मजबूत हो, उसी प्रकार यदि प्रेम के बन्धन को मजबूत बनाना है तो अहंकार एवं अभिमान को निकाल दो, झुकना सीख जाओ और विनम्र बन जाओ । सबके प्रिय बन जाओगे। जीवन में विकास के लिए थोड़ा सामाजिक भी बनना आवश्यक है।

-अज्ञात

6. 'संतो-न' से सर्वोत्तम सुख प्राप्त होता है ।

-पातंजलि

7. 'मृत्यु' सोने की वह चाबी है, जो अमृत्व के दरवाजे को खोलती है ।

-अज्ञात

8. नि-काम होकर नित्य पराक्रम करने वाले की गोद में उत्सुक होकर स्वयं सफलता आती है ।

-अज्ञात

9. घृणा राजाओं की संपत्ति है, क्षमा मनु-यत्व का चिह्न है जबकि प्रेम देवताओं का स्वभाव है ।

-भर्तृहरि

10. निरन्तर अथक परिश्रम करने वाला भाग्य को भी परास्त कर देगा ।

-तिरूवल्लुवर

11. बच्चों का हृदय एक कोमल क्यारी के समान है । इसमें चाहे कंटीली झाड़ी लगा दो, चाहे फूलों के पौधे ।

-अज्ञात

12. भाग्य, पुरू-ार्थ और काल, ये तीनों मिलकर ही मनु-य को फल देते हैं।

-अज्ञात

13. जब भाग्य अनुकूल रहता है, तब थोड़ा पुरूनार्थ भी सफल हो जाता है।

-अज्ञात

14. भाग्य की कल्पना मूढ़ लोग ही करते हैं और भाग्य पर आश्रित होकर वे अपना नाश कर लेते हैं। बुद्धिमान लोग तो पुरूनार्थ द्वारा ही उत्कृ-ट पद को प्राप्त करते हैं ।

-योगवसि-ठ

15. जीवन में यदि हम थोड़ा सहज और संतुलित होकर निर्णय लें, तो न केवल तनाव से बच सकते हैं अपितु अतिरिक्त आनन्द के क्षण भी उत्पन्न कर सकते हैं ।

-अज्ञात

16. क्रोध क्षण भर का पागलपन है ।

-अज्ञात

संग्रहकर्त्ताः-
अश्वनी कुमार शर्मा
जे टी ओ, सी एण्ड सी ग्रुप
मानकीकरण निदेशालय

देश का धन

लाल बहादुर शास्त्री जब देश के प्रधानमंत्री बने तो उनके पुत्रों ने साइकिल से विद्यालय जाने के लिए मना कर दिया । उनके पुत्रों का कहना था कि शास्त्री जी के मंत्रिमण्डल और प्रमुख अधिकारियों के बच्चे विद्यालयों में कारों से जाते हैं ।

शास्त्री जी सरकारी साधनों के निजी उपयोग के प्रबल विरोधी थे । उन्होनें पुत्रों को समझाने का भी प्रयास किया लेकिन बच्चों ने जिद्द कर ली ।

इस पर शास्त्री जी ने स्वयं की कार खरीदने का निश्चय किया । कार खरीदने लायक रुपये नहीं होने के कारण उन्होंने अपने निजी सचिव से विचार-विमर्श किया । उनके सचिव ने सलाह दी कि सरकार की तरफ से आपके वेतन और भत्तों के आधार पर कार खरीदने के लिए ऋण मिल सकता है जिसकी वसूली वेतन में से ही किश्तों में की जा सकती है ।

आखिरकार ऋण लेकर कार खरीद ली गई । जनवरी 1966 में उनके असमय निधन के कारण ऋण की अदायगी नहीं हो पाई । सरकार ने उनके परिवार की कमजोर आर्थिक स्थिति को देखते हुए उनका ऋण माफ करने का निर्णय ले लिया । इस निर्णय की सूचना पत्र के माध्यम से उनकी धर्मपत्नी ललिता शास्त्री को भी दे दी गई ।

ललिता जी ने सरकार के निर्णय से असहमति जताते हुए उत्तर दिया कि इस विचार से मेरे दिवंगत पति की आत्मा को शांति नहीं मिलेगी । ऋण की बकाया राशि को उनकी मृत्यु के बाद मिलने वाली पेंशन,ग्रेच्यूटी आदि की राशि में से काट ली जाए । ऐसे थे लाल बहादुर शास्त्री और उनकी सहधर्मिणी ललिता शास्त्री ।

संग्रहकर्त्ताः-
आदर्श कुमार
जे टी ओ, सी एण्ड सी ग्रुप
मानकीकरण निदेशालय

श्री देवी मुसद्दी

श्री देवी एक मारवाड़ी परिवार की कन्या और मारवाड़ी की बहू थी । उनके पति श्री रामचन्द्र मुसद्दी क्रांतिकारियों से सहानुभूति रखते थे और समय-समय पर उनकी सहायता भी करते थे । रक्षा-बंधन का दिन था । घर में परिवार की और महिलाएं भी आयी हुई थीं । पुलिस की नजरों से बचने के लिए चन्द्रशेखर आजाद इलाहाबाद में इनके घर में छिपे हुए थे, उन्हें तलाश करती हुई पुलिस वहां आ पहुँची । घर की घेराबन्दी कर ली गई लेकिन कुशाग्र बुद्धि श्री देवी ने चन्द्रशेखर को नौकर के कपड़े पहनाये और एक परात में मिठाई आदि कुछ सामान रखा और जैसे ही पुलिस ने घर में प्रवेश किया श्रीमती मुसद्दी ने आजाद को एक नौकर के रूप में डांटते हुए कहा- "जानता नहीं, आज रक्षा-बंधन है, मुझे भाई के घर जाने में देर हो रही है । जल्दी से परात उठा और चल । " यह क्रिया उन्होंने इतने स्वाभाविक और सहज रूप से की कि पुलिस को संदेह तक नहीं हुआ और बिना शिनाख्त का अवसर दिये वे आजाद के सिर पर परात रखवा कर घर से निकल गई । पुलिस वाले सोच भी नहीं सके कि इतना प्रबुद्ध तथा तेजस्वी क्रांतिकारी नौकर के रूप में उन्हें धोखा देकर निकल जाएगा । बाद में तलाशी होती रही और पुलिस खाली हाथ मलते लौट गई ।

श्री देवी ने इस प्रकार और भी कई बार विविध रूपों में क्रांतिकारियों की सहायता की। वह यह सब कुछ अपने पति की प्रेरणा से ही कर पायी । उन्हें 6 महीने की सजा भी काटनी पड़ी । परन्तु देश सेवा के अपने कार्य से वह डिगी नहीं । ऐसी महान माताओं ने ही भारतमाता की शान को बनाये रखा हुआ है ।

संग्रहकर्त्ताः-
आदर्श कुमार
जे टी ओ, सी एण्ड सी ग्रुप
मानकीकरण निदेशालय